संवाद

अंक 04 : अक्टूबर से दिसम्बर 2023
त्रैमासिक पत्र

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल, राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

दसवां दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल का दसवां दीक्षांत समारोह 28 अक्टूबर 2023 को आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली के कार्यकारी और अकादमिक प्रमुख, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार थे इस अवसर पर बोर्ड ऑफ गवर्नर्स एवं सीनेट के सदस्य, संकाय सदस्य, कर्मचारीगण एवं स्नातक छात्र उपस्थित थे। कुल 241 छात्रों (80 स्नातक, 156 स्नातकोत्तर और 5 पीएचडी) को डिग्री प्रदान की गई। इसके अलावा, उत्कृष्टता के दो पदक, नौ प्रवीणता स्वर्ण पदक, नौ सर्वश्रेष्ठ थीसिस पुरस्कार और थीसिस के लिए प्रशंसा का एक प्रमाण पत्र भी दिया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023

संस्थान ने 30 अक्टूबर से 05 नवंबर 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 30 अक्टूबर 2023 को संकाय और स्टाफ सदस्यों द्वारा सतर्कता की शपथ ली गई। इसी तारतम्य में श्री भरत कुमार व्यास, सचिव, विधि एवं विधायी कार्य विभाग मध्य प्रदेश शासन, द्वारा ''भ्रष्टाचार विरोधी अधिनियम : राह और प्रक्रिया''पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया।

Observation of Vigilance Awareness Week 2023

स्थापना दिवस व्याख्यान

संस्थान का स्थापना दिवस समारोह दिनांक 10 अक्टूबर 2023 को हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर, श्री विद्याधर के. पाठक, पूर्व प्रिंसिपल चीफ, टी एंड सीपी डिवीजन (एमएमआरडीए) ने ''भूमि मूल्य पर कब्जा'' एक वादा या एक चुनौती'' पर व्याख्यान दिया। और डॉ. अमिता भिडे, प्रोफेसर, सेंटर फॉर अर्बन पॉलिसी एंड गवर्नेंस, टीआईएसएस, मुंबई ने ''भारत में संपत्ति के सामाजिक कार्य की अवधारणा'' पर व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर बी.आर्क की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्रा को ''गिरिराज किशोरी मेमोरियल मेडल 2023'' और बी. प्लान प्रोग्राम की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्रा को ''कल्याणी अम्माल मेमोरियल अवार्ड 2023'' दिए गए।

विरासत के 75 रंगों पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

संस्थान परिसर में 29 सितंबर से 1 अक्टूबर 2023 तक विरासत के 75 रंगों पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में भारत की वास्तुकला पर ''मंदिरों का प्रदर्शन'' प्रमुख आकर्षण था" जो कि 2 अक्टूबर से 7 अक्टूबर 2023 तक सामान्य जनता के लिए प्रदर्शित की गई थी। इस प्रदर्शनी में 1) होलोग्राफिक मंदिर प्रदर्शन 2) स्व मंदिर निर्माण 3) गवाक्ष का निर्माण 4) आशापुरी मंदिर समूह 5) भोजपुर में शिव मंदिर और 6) भारत में मंदिरों का विकास शामिल था। जिसमें गुप्त काल से होयसल काल तक भारत में मंदिर वास्तुकला की विकास यात्रा को दिखाया गया था। यह राष्ट्रीय सम्मेलन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्य प्रदेश सरकार, मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड, विजना भारती, आईसीओएमओएस इंडिया, एमपी काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और मीडिया पार्टनर दैनिक भास्कर के सहयोग से आयोजित किया गया था। सम्मेलन में भारत के 19 राज्यों से 100 प्रतिनिधि ने भाग लिया। तीन दिवसीय सम्मेलन को 7 सत्रों में विभाजित किया गया यानी 1) सांस्कृतिक और पवित्र परिदृश्य, 2) पवित्र वास्तुकला, 3) ऐतिहासिक सार्वजनिक वास्तुकला, 4) स्मारकीय वास्तुकला, 5) ऐतिहासिक शहर और पवित्र शहर, 6) अमूर्त की मूर्तता और 7) वास्तुकला और योजना में जागरूक राष्ट्रवाद।

भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र

नगर नियोजन भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र की स्थापना दिसंबर 2022 में शिक्षा मंत्रालय (एमओई), एआईसीटीई आईकेएस डिवीजन, नई दिल्ली के अनुदान से एसपीए भोपाल में की गई है। केंद्र का उद्देश्य अपनी अर्थव्यवस्था, राजनीति और शासन के संदर्भ में नगर नियोजन से जुड़ी भारतीय ज्ञान प्रणालियों को उजागर करना और प्रसारित करना है। नगर नियोजन के भारतीय ज्ञान में उस स्थान के भूगोल, राजनीतिक सापेक्षता और शासन व्यवस्था पर विचार किया जाता है। प्रकृति के प्रति सम्मान, ब्रह्माण्ड संबंधी विचार, साझा संसाधन, सामंजस्यपूर्ण सामुदायिक जीवन और संस्कृतिक को प्रतिबिंबित करने वाली स्थानिक योजना सभी भारतीय शहरों की अवधारणा में अभिन्न अंग थे।

भारत में नगर नियोजन अभी भी पूंजीवाद पर आधारित पश्चिमी सोच से प्रभावित है। सीआईकेएसटीपी टाउन प्लानिंग के आईकेएस को समकालीन समय में प्रासंगिक बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगा जिससे प्राचीन और नई ज्ञान प्रणालियों के बीच अंतर को पाटने में मदद मिलेगी। प्रतिमा विज्ञान, पुरालेख, पुरातत्व और इतिहास के संबद्ध क्षेत्रों के संयोजन में अनुसंधान के माध्यम से, हम प्राचीन भारत में मौजूद ज्ञान प्रणालियों की समग्र व्याख्या बनाने का उद्देश्य रखते हैं। वर्तमान नगर नियोजन देश के स्पष्ट उपनिवेशीकरण और पश्चिम में पूंजीवाद के साथ उभरी हैं। हमारी नियोजन उसी रास्ते पर चली हैं। स्वतंत्रता के बाद धूमिल होते ज्ञान की ओर जोर दिया जाना चाहिए था। फिर भी, हमारी विशिष्ट पहचान की तलाश में यह समय की मांग है। इसलिए प्राचीन नियोजन सिद्धांतों के महत्व और समकालीन समय और भविष्य में उनकी प्रयोज्यता को सामने लाने के लिए आज जो अभ्यास किया जाता है उसकी समीक्षा आवश्यक है।

समुन्नति 2023

योजना और वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नगर नियोजन भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र, सांस्कृतिक ज्ञान प्रणाली केंद्र और संरक्षण विभाग ने संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से वास्तुकला परिषद द्वारा आयोजित समुन्नति 2023, कला वास्तुकला अभिकल्प छात्र द्विवार्षिकी में सफलता पूर्वक भाग लिया। उक्त आयोजन दिनांक 9 दिसंबर 2023 से 15 दिसंबर 2023 के मध्य ललित कला अकादमी मे था। इंटरएक्टिव प्रदर्शनी में 8 डिस्प्ले पैनल और 2 गेम शामिल थे, जिसमें प्राचीन ग्रंथों में आवास योजना को विजुअलाइज करने का अनुभाग, प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त आवास योजना सिद्धांतों का परिचय और प्राचीन आवास योजना अवधारणाओं को समझने के लिए एक उपकरण के रूप में पदविन्यास पहेली का डिजाइन शामिल था। गवाक्ष बनाने का अनुभाग गवाक्ष रूपांकनों की उत्पत्ति और पूरे भारत में इसके विकास पर चर्चा करता है। इसके साथ गवाक्ष पहेली के 2 रूपांतर भी थे जिससे खिलाड़ियों को पहेली को हल करते समय गवाक्ष रूपांकन की जटिलता और गणितीय पैटर्न का पता लगाने की अनुमति मिली। प्रदर्शनी ने विभिन्न आयु समूहों के आगंतुकों 8 साल के बच्चों को पहेली से उलझाने से लेकर देश के विभिन्न हिस्सों से आए वास्तुशिल्प छात्रों और उनके प्रोफेसरों को आकर्षित किया। प्रदर्शनी की अपील डिजाइनरों के दायरे से परे बढ़ी और अन्य पेशेवरों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया, जिन्होंने समृद्ध भारतीय वास्तुकला इतिहास और प्राचीन नगर नियोजन के बारे में जानने के साथ–साथ खोज में गहरी रुचि ली।

आनलाइन माध्यम से राष्ट्रीय स्तर के व्यावसायिक विकास कार्यक्रम पर प्रशिक्षण

भू–सूचना विज्ञान केंद्र, एसपीए भोपाल द्वारा 14 दिसंबर 2023 को ''उभरते भू–स्थानिक अनुप्रयोगों'' पर एक दिवसीय (ऑनलाइन) राष्ट्रीय स्तर का व्यावसायिक विकास कार्यक्रम। डॉ. वेणुगोपाला राव, पूर्व वैज्ञानिक, एनआरएससी ने मुख्य भाषण दिया। उक्त आयोजन में रिसोर्स पर्सन के रूप में डॉ. वेणुगोपाला राव, पूर्व वैज्ञानिक, एनआरएससीय डॉ. विनोद के कुर्मी, आईआईएसईआर भोपाल, डॉ. नटराज क्रांति, एसपीए भोपाल, और डॉ. काकोली साहा, को शामिल किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर से विभिन्न प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को ई–प्रमाणपत्र भी दिये गये। इस कार्यक्रम का समन्वयन भू–सूचना विज्ञान केंद्र के प्रमुख प्रोफेसर नटराज क्रांति और भू–सूचना विज्ञान केंद्र की समन्वयक डॉ. काकोली साहा ने किया।

आई.टी.पी.आई. के सदस्यों का दौरा

इंस्टीट्यूट ऑफ टाउन प्लानर्स, इंडिया (आईटीपीआई) द्वारा नामित दो सदस्यीय विशेषज्ञ समिति ने 24 नवंबर 2022 को दौरा किया। दौरे का उद्देश्य स्नातकोत्तर दो वर्षीय (चार सेमेस्टर) डिग्री कार्यक्रम ''मास्टर ऑफ प्लानिंग'' को मान्यता देना था। दौरे में, विशेषज्ञ टीम ने प्रशासनिक अधिकारियों निदेशक, रजिस्ट्रार, डीन अकादमिक और विभागाध्यक्ष के साथ बातचीत की। उन्होंने विभाग के शिक्षकों और छात्रों से भी बातचीत की। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी कृतियों को प्रदर्शनी में प्रस्तुत एवं प्रदर्शित किया। विशेषज्ञ टीम ने शैक्षणिक भवन, विभाग भवन, पुस्तकालय, जीआईएस प्रयोगशाला और परिवहन प्रयोगशाला का दौरा किया।

एसपीए भोपाल के निदेशक प्रो. कैलाश राव, आई.जी.आर.एम.एस. की मुक्ताकाश प्रदर्शनी में शामिल

1 नवम्बर 2023 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस), भोपाल में विश्व विज्ञान दिवस यूनेस्को द्वारा आधारित थी। ''विज्ञान में विश्वास' पर मनाया गया। उक्त आयोजन के एक भाग के रूप में संग्रहालय ने पारंपरिक प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में पारंपरिक तकनीकों का लाइव प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। उक्त प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के समापन समारोह में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के निदेशक प्रो. कैलाश राव, को मुख्य अतिथि हेतु आमंत्रित किया गया था। प्रो. राव ने झारखंड राज्य के बिरजिया जनजाति के मेरठकुथी (लौह प्रज्वलन भट्टी) द्वारा लौह अयस्क से लोहा निकालने की तकनीक, छत्तीसगढ़ राज्य के लोक समुदाय के त्रिराही (पारंपरिक तेल निकालने का उपकरण) द्वारा तेल कुचलने की तकनीक का प्रदर्शन और आंध्र प्रदेश राज्य के लोक समुदाय की सुन्नपुट्टी (चूने से तैयार कान भट्टी) और सुन्नपुगंगु (चूने का मिश्रण बनाने वाला उपकरण) के साथ–साथ एडुलामोटा (पारंपरिक जल खींचने वाला उपकरण) तकनीक के प्रदर्शन का अवलोकन किया।

मीडिया कवरेज

एसपीए का दीक्षांत समारोह • 241 स्टूडेंट्स को मिली डिग्रियां

11 को गोल्ड मेडल, दो को एक्सीलेंस और 9 को बेस्ट थीसिस अवॉर्ड मिला

सिटी रिपोर्टर। स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) में शनिवार को 10वीं कन्वोकेशन सेरेमनी का आयोजन किया गया। इसमें 241 स्टूडेंट्स को मास्टर्स और ग्रेजुएशन की डिग्रियां प्रदान की गईं। यह पहला मौका था, जब एसपीए का दीक्षांत समारोह उसके अपने कैंपस में हुआ। मुख्य अतिथि के तौर पर इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स के एकेडमिक हेड डॉ. सच्चिदानंद जोशी मौजूद रहे। इस मौके पर 9 स्टूडेंट्स को प्रोफिशिएंसी गोल्ड मेडल, 2 स्टूडेंट्स को मेडल ऑफ एक्सीलेंस और 9 स्टूडेंट्स को बेस्ट थीसिस के लिए अवॉर्ड दिया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. सच्चिदानंद जोशी, चेयरमैन बोर्ड ऑफ गवर्नर प्रो. हाकम दान चरण, डायरेक्टर एसपीए कैलाश राव (बाएं से दाएं)

प्रोफिशिएंसी गोल्ड मेडल

- हार्ड वर्क और कंसिस्टेंसी के कारण मुझे प्रोफिशिएंसी गोल्ड मेडल मिला। मैं अभी हैरिटेज प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हूं। शुरुआत से मैंने कोशिश की कि सारे असाइनमेंट समय पर पूरे करूं और फीडबैक का पूरा ख्याल रखूं। फीडबैक को सीरियसी लेने की आदत ने ही मुझे मेडल तक पहुंचाया। – कीर्ति भारद्वाज, मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर कंजर्वेशन

मेडल ऑफ एक्सीलेंस

- एकेडमिक परफॉर्मेंस अच्छी रही, जिसकी वजह से मुझे यह मेडल मिला। मैं इन दिनों मोरक्को की एक कंपनी के साथ काम कर रही हूं। इस कंपनी में मुझे पहले दो महीने की ट्रैवेल फेलोशिप मिली, अब परमानेंट जॉब मिल गई है। अब कुछ साल खुद को एस्टेब्लिश करने के बाद मास्टर्स डिग्री के लिए अप्लाई करूंगी। – सावी मिलिंद नातेकर, बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर

प्रोफिशिएंसी गोल्ड मेडल

- मैंने एसपीए में एडमिशन के पहले दिन से ही हर दिन कुछ न कुछ नया सीखने को अपना थम्ब रूल बना लिया था। मेडल मिलेगा, इसे कभी टार्गेट नहीं बनाया, मगर हां अपनी क्लास में बेस्ट परफॉरमर रहूं, इसकी कोशिश जरूर की। अब इंडिया के आर्किटेक्चर को बेहतर बनाने के लिए काम करना है। – सुमन कुमारी, बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर

पारंपरिक तकनीक की अहम भूमिका को नकार नहीं सकते

मानव संग्रहालय में पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन करते कलाकार। सौ. आयोजक

मानव संग्रहालय में पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन

मानव संग्रहालय द्वारा संग्रहालय स्थित पारंपरिक तकनीकी मुक्ताकाश प्रदर्शनी में आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड के लोक एवं जनजातीय कलाकारों द्वारा पारंपरिक तकनीकी ज्ञान का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशक प्रोफेसर कैलासा राव एम ने आंध्रप्रदेश की चूना बनाने की भट्टी सुन्नापुबत्ती, छत्तीसगढ़ का तेल निकालने का उपकरण तिरही एवं झारखंड की लोहा गलाने की भट्टी मेढ़हट्ट कुठ्ठी का पारंपरिक तकनीकी के देशज उपकरण का लाइव प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में संग्रहालय के निदेशक प्रो. अमिताभ पांडे ने बताया कि आधुनिक तकनीक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकते हैं पर सदियों तक लोगों के निर्वाह करने वाले पर्यावरण के अनुरूप तकनीकों का आविष्कार किया, वो आज भी प्रासंगिक है। आज भी जिसे हम पारंपरिक ज्ञान कहते हैं, वह वास्तव में वैज्ञानिक तर्क पर आधारित है। कार्यक्रम समन्वयक डा. सोमा किरो ने बताया कि संस्कृति एवं सौन्दर्य अभिव्यक्ति के कारण हस्त निर्मित विभिन्न रूपों और आकारों में पूरे देश में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। इस कार्यशाला में छत्तीसगढ़ के पंडित राम रजवार एवं सौहाद्री बाई एवं मोहर लाल ने लोकसमूह के द्वारा तिरही में विभिन्न प्रकार के बीजों से तेल निकालने की पारंपरिक तकनीक की जानकारी दी। झारखंड से आए अर्जुन बिरिजिया, रामधनी एवं थेडोर ने लोह अयस्क से लोहा निकलने की तकनीक के बारे में बताया।

एसपीए में टैम्पल आर्किटेक्चर पर तीन दिनों की वर्कशॉप

हर 100 साल में बदलते नजर आते हैं इंडिया के मंदिरों के गवाक्ष

सिटी रिपोर्टर | स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर में '75 शेड्स ऑफ हैरिटेज' विषय पर चल रही तीन दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस में शनिवार को 56 रिसर्च पेपर्स प्रेजेंट किए गए। इसमें मुख्य रूप से हमारी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर पर चर्चा हुई। इसमें तेजश्री ने हिंदी सिनेमा में दिखाई गई भारतीय धरोहर के प्रभावों पर चर्चा की। उज्ज्वला ने कंबोडिया के मंदिरों में भारतीय वास्तुकला के प्रभाव पर बात की।

इस मौके पर नंदिनी मुखोपाध्याय ने भारत में टैंपल टाउंस की अवधारण पर बात रखी। ग्वालियर से आईं वास्तुकला की स्टूडेंट श्रेय पटेरिया ने माप की प्राचीन इकाइयों पर रिसर्च पेपर किया, वहीं श्रुति कटारे ने वास्तु एवं उसकी वहनीयता पर बात की।

स्टूडेंट्स ने हैंडऑन प्रैक्टिस कर समझी मंदिर की डिजाइन

नेशनल कॉन्फ्रेंस के तहत आयोजित प्रदर्शनी में शनिवार को पजल गेम्स के जरिए स्टूडेंट्स को मंदिर की जालियों की डिजाइन्स तैयार करने का टास्क दिया गया। इसमें स्टूडेंट्स ने मंदिरों में बनी खूबसूरत जालियों को कैसे सेट किया जाता है, इसकी हैंड्स ऑन प्रेक्टिस करके देखा। टेक्निकल सेशन में शनिवार को मंदिर गवाक्ष निर्माण पर बात की गई। बताया गया कि किस तरह से मंदिर के गवाक्ष के डिजाइन इंडिया में हर 100 सालों के अंतराल पर बदलते नजर आए।